**पाठ - 9** **फरवरी 24 - मार्च 2**

## कृतज्ञता की भेंट

**सब्त अपराह्न** **मार्च 2**

**इस सप्ताह के अध्ययन के लिये पढ़ें :** मत्ती 6:19-21; इफि० 2:8; 1पत० 4:10; लूका 7:37-47; 2कुरिं० 8:8-15; 2कुरिं० 9:6-7.

**याद वचन :** *"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)।*

हमारा परमेश्वर देने वाला परमेश्वर है। यह महान सच्चाई सशक्त रूप से यीशु के बलिदान में दिखाई देती है। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत् से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)। अथवा इस पदस्थल में "सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़के वालों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा!" (लूका 11:13)।

परमेश्वर देता है और देता है; यह उसका चरित्र है। इस प्रकार हम जो उस चरित्र को प्रतिबिम्बित करना चाहते हैं वैसा ही देने की जरूरत है। एक स्वार्थी मसीही की अपेक्षा प्रतिवाद शर्त की कल्पना करना कठिन है।

हमें जो दिया गया है, वापस देने का एक तरीका दान देने के द्वारा है। हमारा दान कृतज्ञता और प्रेम को प्रकट करने का एक सुअवसर प्रदान करता है। उस दिन जब यीशु छुड़ाए हुओं का स्वर्ग में स्वागत करता है हम उन्हें देखेंगे जिन्होंने उसके अनुग्रह को स्वीकार किया, और महसूस करेंगे कि वे स्वीकृतियाँ हमारे बलिदानों के द्वारा संभव हुई।

इस सप्ताह हम दानों के महत्त्वपूर्ण पहलूओं पर निगाह डालेंगे। उदारता से देने के द्वारा, चाहे साधनों, समय या प्रतिभा से, यह हमारे विश्वास को जीने का और जिस परमेश्वर की सेवा हम करते हैं उसके चरित्र को प्रकट करने का सशक्त माध्यम है।

**रविवार** **फरवरी 25**

**"जहाँ तेरा धन है"**

पढ़ें मत्ती 6:19-21, यद्यपि हम इन पदस्थलों से परिचित हैं, फिर भी हम सांसारिक खजाने की मजबूत पकड़ से जो हम पर हो सकता है कैसे छुटकारा पा सकते हैं? देखें, कुल० 3:1-2.

---

- सब्त मार्च 3 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

"क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा" (मत्ती 6:21) यह यीशु की ओर से एक अपील है। इस कथन का पूर्ण महत्त्व पिछले दो पदस्थलों में देखा जा सकता है, जो पृथ्वी पर हमारे धन को जमा करने का विरोध स्वर्ग में उन्हें जमा करने के साथ करता है। तीन शब्द इस पृथ्वी का वर्णन करते हैं: कीड़े, जंग, और चोर (देखें मत्ती 6:19), ये सब हमारे सांसारिक खजाने को सूचित करते हैं कि वे कितने अस्थायी और क्षणभंगुर हैं। किसने नहीं सीखा है कि कितनी जल्द सांसारिक वस्तुएँ खत्म हो सकती हैं? "पृथ्वी पर सब कुछ अस्थिर, अनिश्चित और असुरक्षित है; यह सड़ने, नाश होने, चोरी होने, और घाटा होने वाली है। स्वर्ग इसके विपरीत है: सबकुछ अनन्त, टिकाऊ, सुरक्षित और अविनाशी है। स्वर्ग में घाटा नहीं है।"
– सी०एडलीना एलेक्स, "वेर योर हार्ट बिलोंग", इन बियोन्ड ब्लेसिंगस, पेज 22।

अपनी सम्पत्ति पर दृष्टि डालें। जौभी कि आप के पास बिलकुल थोड़ी है, कभी न कभी उनमें से अधिकतर बिखर जायेंगी। पैतृक सम्पत्ति अपवाद हो सकती है। परन्तु एक बुद्धिमान भण्डारी को सुरक्षा की दृष्टि से स्वर्ग में खजाने को रखने की चिंता होनी चाहिए। वहाँ पर, यहाँ से भिन्न, आपको मंदी, चोरों, या लूटमार करने वालों की चिंता नहीं है।

मत्ती 6:19-21 भण्डारीपन पर अति महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक को सम्मिलित करता है। आपका खजाना आपके हृदय को नियंत्रित करने के लिये खींचता है, मजबूर करता है, भांग करता है, आकर्षित करता है और इच्छा करता है। भौतिक जगत में, आपका हृदय आपके खजाने का पीछा करता है, इसलिये जहाँ आपका खजाना है सर्वोच्च महत्त्व रह जाता है। जितना अधिक हम सांसारिक जरूरतों और प्राप्तियों पर ध्यान लगाते हैं उतना ही स्वर्गीय वस्तुओं के लिये सोचना कठिन हो जाता है।

परमेश्वर में विश्वास की वकालत करना परन्तु हमारे खजाने को इस पृथ्वी पर रखना पाखंडीपन है। हमारे कामों को हमारे शब्दों के साथ मेल होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हम निगाह से हमारे खजाने को इस पृथ्वी पर देखते हैं, परन्तु हमें हमारे दानों को खजाने के तौर पर विश्वास के द्वारा स्वर्ग में देखना चाहिए (2कुरि० 5:7)। यद्यपि हमें निस्संदेह हमारी जरूरतों के लिये प्रयोग और व्यवस्था की जरूरत है, हमेशा मन में बड़ी तस्वीर, अनन्तकाल को रखना अति आवश्यक है।

पढ़ें, इब्रानी 10: 34, पृथ्वी पर खजाना और स्वर्ग में खजाना के बीच फर्क के विषय पौलुस किस महत्त्वपूर्ण बिंदु को गठन करता है?

**सोमवार** **फरवरी 26**

**परमेश्वर के अनुग्रह के भण्डारी**

इफिसियों 2: 8 के अनुसार, कौन-सी अन्य चीजें हैं जो परमेश्वर ने हमें दी है?

---

अनुग्रह "अनर्जित सहायता" है। यह एक उपहार है जिसके लिये आप नालायक हैं। परमेश्वर ने अपना अनुग्रह इस ग्रह पर उंडेला है और, यदि हम इसे ऐसे ही इनकार नहीं करते, उसका अनुग्रह नीचे आकर हमारे जीवनों को बदल देगा, अभी और अनन्त काल के लिये। स्वर्ग की सारी सम्पत्ति और शक्ति अनुग्रह के उपहार के साथ सम्मिलित हो जाती है (2कुरिं० 8: 9)। इस सर्वश्रेष्ठ उपहार पर स्वर्गदूत भी चकित हो गये हैं (1पत० 1: 12)।

कोई प्रश्न नहीं, वह सब जो परमेश्वर हमें देता है, अनुग्रह जो मसीह यीशु में हमें दिया गया है, सब उपहारों में अधिक मूल्यवान है। अनुग्रह के बिना हम आभारहित हो जाते। मनुष्य पर पाप का उदासपूर्ण प्रभाव इतना बड़ा है कि वह इससे छुटकारा नहीं पा सकता। परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारिता भी हमें जीवन नहीं दे सकती है। "तो क्या व्यवस्था परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के विरोध में है? कदापि नहीं। क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था दी जाती जो जीवन दे सकती, तो सचमुच धार्मिकता व्यवस्था से होती" (गल० 3: 21)। आखिरकार, यदि कोई व्यवस्था हमें बचा सकती तो वह परमेश्वर की व्यवस्था हो सकती है। परन्तु पौलुस कहता है कि वह भी इस काम को नहीं कर सकता है। यदि हमें बचाया जाना है तो यह अनुग्रह ही हो सकता है।

पढ़ें 1पतरस 4: 10, भण्डारीपन किस पर अनुग्रह से संबंधित है? विश्लेषण करें, किस प्रकार परमेश्वर को देना और दूसरों को देना, उसके अनुग्रह को चित्रित करता है।

---

---

पतरस ने कहा कि जिस प्रकार हमने परमेश्वर के अनुग्रह के उपहार को प्राप्त किया है, हमें बदले में "परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारी" होना है (1पत० 4: 10) यह कि परमेश्वर ने हमें उपहार दिये हैं;

इसलिये हमें जो दिया गया है उसमें से हमें वापस देने की जरूरत है। जिसे हमने अनुग्रह के द्वारा प्राप्त किया है, हमें लाभान्वित और खुशी देने के लिये नहीं है, परन्तु सुसमाचार को फैलाने के लिये है। मुफ्त हमने पाया है; तब मुफ्त हमें हर प्रकार से देने की जरूरत है।

उन सब के विषय सोचें जो आपको परमेश्वर द्वारा दिया गया है। किस प्रकार से, तब आप अनुग्रह के भण्डारी हो सकते हैं जो आप को मुफ्त दिया गया है?

**मंगलवार** **फरवरी 27**

**हमारी सर्वोत्तम भेंट**

पढ़ें लूका 7:37-47, परमेश्वर को भेंट के लिये उचित प्रेरणा के विषय में यह कहानी हमें क्या सिखलाती है?

_____

_____

मरियम कमरे के अंदर घुसी और उसने यीशु को मेज के सहारे टिके हुए देखा। उसने कीमती इत्र के डिब्बे को तोड़ा और उसपर उंडेला। कुछ लोगों ने सोचा उसका व्यवहार अनुचित था, सोचते हुए कि जीवन जो वह जी रही थी अवैध था।

परन्तु मरियम दुष्टात्माओं से छुटकारा पा चुकी थी (लूका 8:2)। तब लाजरूस के पुनरुत्थान का गवाह बनने के बाद, वह कृतज्ञता से भर गई। उसका इत्र उसके लिये सबसे मूल्यवान चीज थी, और यह यीशु के प्रति कृतज्ञता दिखाने का उसका तरीका था।

यह कहानी आकर्षित करती है, हमारी भेंट देने में हमारी प्रेरणा वास्तव में क्या होनी चाहिए: कृतज्ञता। आखिरकार परमेश्वर के अनुग्रह के अनमोल उपहार के प्रति हमारी दूसरी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए? उसकी उदारता भी हमें देने के लिये उकसाती है, और जब कृतज्ञता के साथ युगल हो जाती हैं, दोनों अर्थपूर्ण भेंट के घटक को पूरा करती हैं इसमें हमारा समय, योग्यता, खाजाने और शरीर सम्मिलित होते हैं।

पढ़ें निर्गमन 34:26, लैव्यवस्था 22:19-24 एवं गिनती 18:29, जबकि संदर्भ आज से बिलकुल भिन्न है, हमारी भेंट के संबंध में इन अवतरणों से हम क्या सिद्धांत ले सकते हैं।

_____

_____

हमारी सर्वोत्तम भेंट हमारी दृष्टि में नाकाफी लगते हैं, परन्तु वे परमेश्वर की दृष्टि में अहम हैं। परमेश्वर को सर्वोत्तम देना दिखाता है कि हम परमेश्वर अपने जीवन में प्रथम स्थान देते हैं। हम समर्थन प्राप्त करने के लिये भेंट नहीं देते; वरन, हम कृतज्ञता से जो मसीह यीशु में हमें दिया गया है, देते हैं।

"सम्पूर्ण भक्ति और भलाई, एहसानमंद प्रेम के द्वारा प्रेरित होकर, सबसे छोटी भेंट प्रदान करेगी, इच्छित बलिदान, ईश्वरीय सुगन्ध, उपहार को अनमोल बनाती है। परन्तु, स्वेच्छा से हमारे उद्धारकर्त्ता के प्रति समर्पित होकर वह सब जो हम प्रदान करते हैं, यह सदा के लिये हमारे लिये मूल्यवान रहे, यदि हम परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता के हमारे कर्ज को देखें जैसा यह वास्तव में है, जितने भी हमने दान दिये हैं बहुत नाकाफी और तुच्छ लगने लगेंगे। परन्तु इन भेंटों को स्वर्गीय दूत ले जाते हैं, जो हमें बहुत कम लगता है, और उन्हें सिंहासन के सामने सुगन्धित भेंट के रूप में पेश करते हैं, और वे ग्रहण किये जाते हैं।"– एलेन जी ह्वाईट, टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 3, पेज 397.

**बुधवार** **फरवरी 28**

**हृदय के उद्देश्य**

शुरुआती पाठमें हमने विधवा के उदार दान की कहानी देखी। यद्यपि, दूसरों के दानों की तुलना में बहुत कम था, यह प्रचुर था क्योंकि यह उसके चरित्र और हृदय के सच्चे स्वभाव को दिखाता था, जिसने यीशु को यह कहने को प्रेरित किया, "इस कंगाल विधवा ने सबसे बढ़कर डाला है" (लूका 21:3)।

केवल परमेश्वर (याकूब 4:12) हमारे सच्चे उद्देश्यों को जानता है (नीति० 16:2; इसे भी देखें 1कुरिं० 4:5)। गलत प्रयोजनों के साथ सही काम होना संभव है। पर्याप्तता में से देना अधिक विश्वास की मांग नहीं करता है, परन्तु दूसरों की भलाई के लिये बलिदान स्वरूप देना, वाकई हमारे हृदय के विषय कुछ बहुत प्रभावशाली कह सकता है।

पढ़ें 2कुरिन्थियों 8:8-15, देने और देने के उद्देश्यों से संबंधित किस विषय पर पौलुस यहाँ पर बात कर रहा है? इन अवतरणों से भण्डारीपन से संबंधित किन सिद्धांतों को हम ले सकते हैं?

_____

_____

_____

देने के विषय में आपका उद्देश्य जो भी रहा हो, यह एक निरंतरता पर है जो अहम् और परोपकारिता को श्रंखलाबद्ध करता है। इस निरंतरता पर और स्वार्थ के बीच, किसी अन्य आत्मिक लड़ाई की अपेक्षा, अधिक लड़ी जाती है। स्वार्थ एक हृदय को ठंडा कर देगा जो एक बार परमेश्वर के लिये आग पर था। समस्या आती है जब हम स्वार्थ को हमारे मसीही जीवन में आने देते हैं। यह कि हम हमारे स्वार्थ को न्यायोचित ठहराने के रास्ते ढूंढ़ते हैं और इसे मसीह के नाम में करते हैं।

निचली पंक्ति एक शब्द में आ जाती है: प्रेम। और प्रेम आत्म-त्याग के बिना दर्शाया नहीं जा सकता है, स्वयं को देने की इच्छा, यहाँ तक कि बलिदान के तौर पर जो दूसरों की भलाई के लिये है।

जबतक परमेश्वर का प्रेम हमारे जीवनों में प्रतिबिम्बित नहीं होता है, हमारा देना परमेश्वर के प्रेम को प्रतिबिम्बित नहीं करेगा। एक स्वार्थी हृदय स्वयं ही को प्रेम करने की ओर प्रवृत होता है। हमें परमेश्वर से पूछना चाहिए "(हमारे) हृदय का खतना कर" (व्यवस्था० 10: 16) ताकि हम प्रेम करना सीखें जिस प्रकार हमें प्रेम किया गया है।

प्रेम, सभी उपकार का मूल है, सभी मसीही भलाई के जोड़ को जीत लेता है। परमेश्वर का प्रेम जो हमारी ओर निर्देशित है बदले में हमें प्रेम करने को प्रेरित करता है, और सचमुच यह देने का उच्चत्तम प्रयोजन है।

गलत क्या है, यदि कुछ स्वेच्छा से प्रेम की भावना की अपेक्षा आभार की भावना से दिया जाता है?

**बृहस्पतिवार** **मार्च 1**

**देने का अनुभव**

यदि मसीह परमेश्वर के चरित्र को हमपर प्रकट करने आया, तो एक चीज अभी तक स्पष्ट हो जानी चाहिए: परमेश्वर हम से प्रेम करता है, और वह हमारे लिये केवल सर्वोत्तम चाहता है। वह हमसे वही करने को कहता है जो हमारे लिये लाभ का कारण हो, हमारी हानि के लिये नहीं। यह हमारे लिये उसकी बुलाहट को भी शामिल करता है कि हम उदार और प्रसन्नदाता बनें, जो हमें दिया गया है। स्वेच्छा और उदार दान जो हम देते हैं दाता के तौर पर हमें स्वयं को जितना लाभान्वित करता है उन्हें भी उतना ही लाभान्वित करना चाहिए जो इसे प्राप्त करते हैं। केवल वे जो इस प्रकार देते हैं वे ही जानते हैं कि देना प्राप्त करने से कितना आशीष का कारण होता है।

पढ़ें 2कुरिन्थियों 9: 6-7, यह पद क्यों इतना संपुटित करने (डिब्बे में बंद) वाला है कि देना क्या होना चाहिए?

_____

_____

एक उदार दान देना बहुत ही व्यक्तिगत आत्मिक कार्य हो सकता है और होना चाहिए। यह विश्वास का कार्य है, मसीह में हमें जो दिया गया है उसके प्रति कृतज्ञता की एक अभिव्यक्ति है।

और जैसे कि विश्वास के किसी कार्य के साथ "देना" ही विश्वास में वृद्धि करता है, क्योंकि "विश्वास कर्म बिना मरा हुआ है" (याकूब 2: 20)। हमारे विश्वास को जीने की अपेक्षा विश्वास में वृद्धि का कोई बेहतर उपाय नहीं है, जिसका अर्थ है चीजों को करना जो हमारे विश्वास से बाहर वृद्धि होती है, जो इससे उत्पन्न होती है। जैसे हम स्वेच्छा और उदारता से देते हैं, हम अपने तरीके से मसीह के चरित्र को प्रतिबिम्बित करते हैं। परमेश्वर को हमारे कामों में अनुभव करने के द्वारा हम उसके विषय सीख रहे हैं कि वह कैसा है। इसलिए, इस प्रकार देना केवल परमेश्वर में भरोसे को गठन करता है और अवसर "परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है। क्या ही धन्य है वह पुरुष जो उसकी शरण लेता है।" (भजन० 34: 8)।

"यह देखा जायेगा कि महिमा जो यीशु के चेहरे पर चमक रही है, स्व: बलिदानी प्रेम की महिमा है। कलवरी के प्रकाश में यह देखा जायेगा कि स्व: त्यागी प्रेम की व्यवस्था पृथ्वी और स्वर्ग के लिये जीवन की व्यवस्था है; कि प्रेम जो "स्वयं की चाहत नहीं करता, इसका स्रोत परमेश्वर के हृदय में है; और यह कि नम्र और दीन हीन में उसका चरित्र उजागर होता है जो उजाले में वास करता है जिस तक किसी मनुष्य की पहुँच नहीं हो सकती है।"– एलेन जी०ह्वाईट, द डिजायर ऑफ एजेस, पेज 20.

स्वेच्छा और उदारता से, आपको दिये गये में से, देने के द्वारा विश्वास की वृद्धि की वास्तविकता को आप किस प्रकार अनुभव करते हैं?

**शुक्रवार** **मार्च 2**

**अतिरिक्त विचार :** "उदारता की आत्मा स्वर्गीय आत्मा है। स्वार्थ की आत्मा शैतान की आत्मा है। मसीह का आत्मा-बलिदानी प्रेम क्रूस पर प्रकट हुआ है। जो भी उसका था उसने दे दिया, और तब उसने स्व्यं को दे दिया, ताकि मनुष्य बचाया जा सके मसीह की क्रूस आशीषित उद्धारकर्त्ता के प्रत्येक अनुयायी की भलाई के लिये अपील करता है। सिद्धांत वहाँ पर उल्लेख किया गया है वह

है देना और देना। यह वास्तविक भलाई और अच्छे कामों में कार्यान्वित हुआ है जो मसीही जीवन का सच्चा फल है। सांसारिक सिद्धांत है पाना और पाना, और इसलिए वे खुशी को सुरक्षित करने की आशा करते हैं, परन्तु इसके समस्त आचरणों में कार्यान्वित करने का फल दुख और मृत्यु है।"– एलेन जी० ह्वाईट, इन ऐडवेंटिस्ट रीविव एण्ड सब्त हेराल्ड, अक्टू० 17,1882.

**विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :**

1. स्वार्थ के विषय यह क्या है जो इसे मसीह की आत्मा का इतना विपरीत बनाता है? चेतन चीजें कौन-सी हैं, जो एक पतित मानव के लिये एक स्वाभाविक प्रवृति से स्वयं को बचाने के लिये, हम कर सकते हैं?
2. "हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़-कुढ़ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है" (2कुरिं० 9: 7), ग्रीक शब्द जो "प्रसन्न" अनुवाद हुआ है केवल नये नियम में एक बार प्रकट होता है और वह शब्द है जिसे हम अंग्रेजी शब्द "hilarious" प्रसन्नता पाते हैं। हमारे देने की प्रवृति के विषय वह हमें क्या बतलाना चाहिए?
3. मसीह में आपको जो चीजें दी गई हैं उन सब की एक सूची बनायें। आप जो भी लिखते हैं उसके विषय प्रार्थना करें। हमें जो दिया गया है उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप हमें क्यों देना चाहिए, इस सूची से हमें क्या सीखना चाहिए? उसी समय, हमारे सर्वोत्तम उपहार के विषय आप की सूची आपको क्या सिखलाती है, जो बेहतरीन उद्देश्यों के लिये दिया गया है, यह जो हमने प्राप्त किया है उससे इतना तुच्छ लगता है?
4. स्वार्थ क्यों एक गारन्टी शुदा तरीका है जो आपको दु:खी बनाता है?
5. अभी आप स्वयं के चर्च परिवार में किसी के विषय सोचें जो किसी प्रकार की जरूरत में है। अभी आप क्या कर सकते हैं जो पहुँच बनाये और इस व्यक्ति या व्यक्तियों को मदद मिले? आप क्या कर सकते हैं, भले ही यह आपके भाग में एक दर्दभरा त्याग बने?